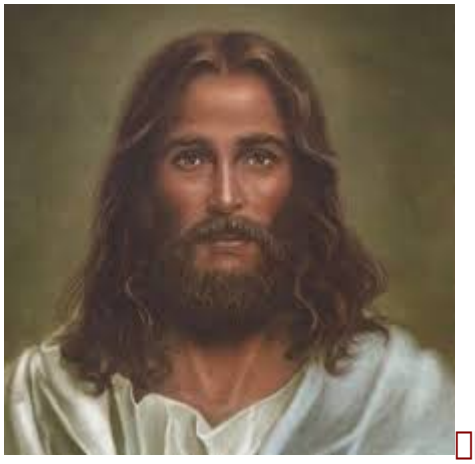
En – मसीह की सेवकाई में चार कठोर परिवर्तन | 1

– Save This Page as a PDF–

मसीह की सेवकाई में चार कठोर परिवर्तन



इस बिंदु पर यीशु का मंत्रालय चार प्रमुख क्षेत्रों
में नाटकीय रूप से बदल गया। इन चार परिवर्तनों को केवल दूसरे मसीहाई चमत्कार के जवाब में मसीहा के रूप में ईसा मसीह की आधिकारिक अस्वीकृति के प्रकाश में ही समझा जा सकता है। पहला परिवर्तन उसके चमत्कारों के उद्देश्य से संबंधित था। उनकी अस्वीकृति से पहले, उनका उद्देश्य उनके मसीहापन को प्रमाणित करना था, लेकिन उनकी अस्वीकृति के बाद वे केवल उनके बारह तल्मिडिम के प्रशिक्षण के लिए थे। इसलिए जोर राष्ट्र से प्रेरितों पर बदल गया।

दूसरे परिवर्तन का संबंध उन लोगों से था जिनके लिए उसने चमत्कार किये थे। अपनी अस्वीकृति से पहले यीशु ने जनता के लाभ के लिए चमत्कार किए और विश्वास का प्रदर्शन करने के लिए नहीं कहा, लेकिन उसके बाद, उन्होंने केवल व्यक्तिगत आवश्यकता और विश्वास के प्रदर्शन के आधार पर चमत्कार किए। इसलिए जोर आस्थाहीन भीड़ से हटकर आस्था वाले व्यक्तियों पर केंद्रित हो गया।

तीसरा परिवर्तन उस संदेश से संबंधित है जो उसने और बारह ने दिया था। उनके अस्वीकार करने से पहले मसीह और उनके प्रेरितों ने येशु को मसीहा घोषित करते हुए पूरे इज़राइल में यात्रा की। जब यीशु चमत्कार करते थे तो वे कहते थे, “जाओ और बताओ कि परमेश्वर ने तुम्हारे लिए क्या किया है।” लेकिन उनकी अस्वीकृति के बाद उन्होंने मौन की नीति स्थापित की। तब वह कहता, “किसी को मत बताना।” मत्ति २८:१६-२०में महान आयोग चुप्पी की उस नीति को रद्द कर देगा। लेकिन उससे पहले, जोर “सभी को बताएं” से बदलकर “किसी को नहीं बताएं” हो गया।

चौथा परिवर्तन उनकी शिक्षण पद्धति से संबंधित था। अपनी अस्वीकृति से पहले मसीह

En – मसीह की सेवकाई में चार कठोर परिवर्तन | 2

ने जनता को उस भाषा में शिक्षा दी जिसे वे समझ सकते थे, लेकिन उसके बाद, वह केवल दृष्टांतों में शिक्षा देंगे। जिस दिन यीशु को अस्वीकार कर दिया गया, उसी दिन उसने उनसे दृष्टांतों में बात करना शुरू कर दिया (मत्ती १३:१-३, ३४-३५; मरकुस ४:३४)। यह समझना असंभव है कि इन चार क्षेत्रों में उनका मंत्रालय क्यों बदल गया जब तक कि हम पहले यह नहीं समझ लेते कि महासभा द्वारा आधिकारिक अस्वीकृति कितनी महत्वपूर्ण थी (देखें Eh – यीशु को महासभा द्वारा आधिकारिक तौर पर अस्वीकार कर दिया गया है)। राक्षसों के कब्जे के आधार पर उनके मसीहापन की अस्वीकृति दूसरे मसीहाई चमत्कार की सीधी प्रतिक्रिया थी (देखें Ek – दूसरा मसीहाई चमत्कार: यह केवल बील्ज़ेबब, राक्षसों के राजकुमार द्वारा है, कि यह साथी राक्षसों को बाहर निकालता है)। इसलिए उन्हें पर्याप्त रोशनी दी गई थी. फरीसियों और इस्राएल ने प्रकाश को अस्वीकार कर दिया था और अब और नहीं दिया जाएगा। इसलिए जोर स्पष्ट शिक्षण से बदलकर परवलयिक शिक्षण पर दिया गया।

जिस दिन फरीसियों और इस्राएल राष्ट्र ने उसे अस्वीकार कर दिया था, उसी दिन यीशु घर से बाहर चला गया और गलील की झील के किनारे बैठ गया। उसके चारों ओर इतनी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई कि वह एक नाव पर चढ़ गया और उसमें बैठ गया, और सभी लोग किनारे पर खड़े रहे। फिर वह उन्हें दृष्टान्तों में सिखाने लगा (मत्ती १३:१-३ए)।

कुछ समय बाद, शिष्य यीशु के पास आए और पूछा: आप लोगों से दृष्टांतों में क्यों बात करते हैं (मत्ती १३:१०)? प्रभु ने उन्हें तीन कारण बताये।

सबसे पहले, बारह प्रेरितों के लिए, दृष्टान्तों का उद्देश्य आध्यात्मिक सत्य को चित्रित करना था। यीशु ने उत्तर दिया: क्योंकि स्वर्ग के राज्य के रहस्यों का ज्ञान तुम्हें दिया गया है (मत्ती १३:११ए)।

दूसरे, उन्हें अविश्वासियों से सच्चाई छिपानी थी। उस समय तक विश्वास में सही ढंग से प्रतिक्रिया देने के लिए पर्याप्त रोशनी दी जा चुकी थी। लेकिन विश्वास की कमी के कारण, उन्होंने उसके मसीहाई दावों को खारिज करके गलत प्रतिक्रिया दी। इसलिए उन्हें आगे कोई प्रकाश नहीं दिया जाएगा (मत्ती १३:११बी)। अपने पहले दृष्टान्त के बाद यीशु ने कहा: जिसके कान हों वह सुन ले (मत्तीयाहु १३:९)। विश्वासियों के पास दृष्टान्तों को सुनने और समझने के लिए आध्यात्मिक कान होंगे। लेकिन अविश्वासियों को सच्चाई से अंधा कर दिया गया था और उनके पास सुनने के लिए आध्यात्मिक कानों का अभाव था।

तीसरा, तानाख में भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए दृष्टांत दिए गए थे (यशायाह पर मेरी टिप्पणी देखें Bs – मैं किसे भेजूंगा? और हमारे लिए कौन जाएगा?)।